प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्माबाबा की पुण्य तिथि

- nqfu;k Hkj esa ^^fo'o 'kkfUr fnol** ds :i esa eukbZ xbZ 18 tuojh
- lkjukFk esa /kEesd Lrwi ds ikl nh xbZ fo'o 'kkfUr ds vxznwr dks HkkoHkhuh J)katfy]
- 'kkfUr ,oa Kku dh mn~xe LFkyh esa fudyk nhiT;ksfr 'kkfUr ;k=k

lkjukFk] 18 tuojh 2010 । प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का अव्यक्त आरोहण दिवस पूरी दुनिया में विश्व शान्ति दिवस के रूप में मनाया गया। उक्त अवसर पर सारनाथ में स्थित धम्मेक स्तूप के समीप ब्रह्मा बाबा को श्रद्धांजलि देते हुए संस्था के ब्रह्माकुमार–कुमारी भाई–बहनों व स्थानीय लोगों ने योग साधना के साथ विश्व शान्ति के लिए विशेष प्रार्थना की । इस दौरान धम्मेक स्तूप से ही दीप ज्योति शान्ति यात्रा निकाली गई जो सारनाथ के विभिन्न क्षेत्रों से होते हुए संस्था के क्षेत्रीय कार्यालय ग्लोबल लाईट हाउस में समाप्ति हुई ।

संस्था की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी, ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी ने सारनाथ में धम्मेक स्तूप के पास आयोजित श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि कहा की प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ईश्वरीय शक्तियों को इस धरा पर मनुष्यात्माओं तक पहुॅचाने के लिए परमात्मा शिव के साकार माध्यम बने। इससे पूर्व वे आम मनुष्यों की भॉति हीरे–जवाहरातों का समृद्ध व्यापार सम्भाल रहे थे । सन् 1935 के दौरान काशी प्रवास के समय हुए दिव्य साक्षात्कारों ने उनके जीवन की धारा को बदल दिया। उन्हें आभास हुआ कि बहुत शीघ्र ही इस कलियुगी दुनिया का महाविनाश एवं तत्पश्चात् एक स्वर्णिम युग का अभ्युदय होगा। उन्होंने पहली बार नारी शक्ति को अध्यात्म के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका देते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के नाम से एक आध्यात्मिक संस्था की स्थापना की । अपने चल–अचल सम्पत्ति एवं संस्था के संचालन की बागडोर नारियों को सौंपते हुए उन्होंने स्वयं को ट्रस्टी के रूप में प्रतिस्थापित किया।

उक्त अवसर पर राजयोगी ब्र.कु. दिपेन्द्र भाई ने कहा कि प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का आध्यात्मिक विचार और आदर्शमय जीवन वर्तमान अशान्त और तनावग्रस्त विश्व में सुख–शान्तिमय जीवन जीने के लिए बहुत ही प्रासंगिक है। उनका आध्यात्मिक शक्ति के द्वारा स्वर्णिम युग के नव निर्माण का सपना वर्तमान समय विश्व के 130 से अधिक देशों में करीबन् 9000 सेवाकेन्द्रों के माध्यम से साकार हो रहा है।

जीवन पर्यन्त स्व–परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के मिशन पर चलने वाले ब्रह्मा बाबा ने 18 जनवरी 1969 को अध्यात्म के सर्वोच्च शिखर को स्पर्श करते हुए सम्पूर्णता को प्राप्त किया था। उनके मुखारबिन्द से निकले हुए अन्तिम महावाक्य ''निराकारी, निर्विकारी एवं निरंहकारी भव'' हम सभी को मानवता की उच्चतम शिखर पर पहुॅचने के लिए सदा प्रेरित करती है ।

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के पुण्य तिथि पर प्रातः संस्था के क्षेत्रीय कार्यालय सारनाथ, शाखा गायघाट, भोजुवीर, नाटी ईमली, गोदौलिया, लहरतारा, सामनेघाट लंका आदि स्थानों पर जहॉ विशेष प्रार्थना की गई वहीं संस्था के आव्हान पर वाराणसी में हजारों लोगों ने अपने घरों में सुबह साढ़े सात से आठ बजे तक प्रार्थना की । इसी क्रम में शान्ति एवं ज्ञान की उद्‌गम स्थली पर स्थित धम्मेक स्तूप पर आयोजित विश्व शान्ति प्रार्थना सभा में क्षेत्रीय विधायक श्री उदयलाल मौर्या के अलावा सभासद, पत्रकार, स्थानीय अधिकारी, कर्मचारीगण एवं समाजसेवियों, प्रबुद्धजनों की सहभागिता रही । उक्त अवसर पर संस्था के सैकड़ो सदस्यों एवं स्थानीय जनसमुदाय ने ब्रह्माबाबा को भावभीनी श्रद्धांजति अर्पित करने के साथ विश्व शान्ति हेतु दीप जलाकर विशेष प्रार्थना भी किया। तत्पश्चात संस्था की क्षेत्रीय निदेशिका बह्माकुमारी सुरेन्द्र दीदी, ब्रह्माकुमार दिपेन्द्र के नेतृत्व में सारनाथ में दीपज्योति शान्ति यात्रा भी निकाली गई । यह यात्रा धम्मेक स्तूप से आरम्भ होकर सारनाथ चौराहा, रंगोली गार्डन होते हुए वापस संस्था के कार्यालय में जाकर समापन हुआ। उक्त अवसर पर ब्र.कु. मधु दीदी, ब्र.कु. बिपिन, ब्र.कु. वन्दना, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. अंजली, ब्र.कु. दुर्गा, ब्र.कु. शिवानी, विजय श्रीवास्तव, ब्र.कु. मोहन भाई, बहन सविता अग्रवाल, डा. मधु जैन, डा. आशा भारद्वाज, डा. आर.के.सिंह, डा. ममता सिंह, डा. योगेश्वर सिंह, डा. अनिल अग्रवाल आदि की उपस्थिति रही ।